Artistic Narration Vol. XII No. 2 July-Dec. 2021 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247 Impact Factor 8.298 (SJIF)

हिन्दी कविताओं में प्रकृति चित्रण का स्वरूपः आधुनिक दृष्टिकोण के विशेष संदर्भ में

डॉ० संध्या गडकोटी
सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग
राजकीय महाविद्यालय रामगढ़, नैनीताल (उत्तराखंड)
इमेलःsandhyagarkoti24@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डा० संध्या गडकोटी

हिन्दी कविताओं में प्रकृति चित्रण का स्वरूपः आधुनिक दृष्टिकोण के विशेष संदर्भ में

Artistic Narration 2021, Vol. XII, No. 2, Article No. 25 pp. 157-164

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xii-no-2-july-dec.-2021/

सारांश

हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण की परम्परा अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध रही है। आदिकाल से लेकर समकालीन कविता तक प्रकृति केवल सौन्दर्य के उपादान के रूप में ही उपस्थित नहीं रही, बल्कि वह मानव जीवन, संवेदना, संस्कृति और सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति का प्रमुख माध्यम भी बनी रही है। हिन्दी काव्यधारा में प्रकृति का स्वरूप समय, समाज और विचारधाराओं के अनुसार निरन्तर परिवर्तित होता रहा है। भक्ति काल में प्रकृति ईश्वर–भक्ति की सहचरी बनी, रीतिकाल में वह श्रृंगारिक सौन्दर्य का माध्यम बनी, छायावाद में वह आत्म–अभिव्यक्ति तथा भावुकता का प्रतीक बनी, जबकि आधुनिक और समकालीन कविता में प्रकृति का स्वरूप यथार्थवादी, पर्यावरणीय और अस्तित्ववादी दृष्टिकोण से विकसित हुआ। आधुनिक हिन्दी कविता में औद्योगीकरण, शहरीकरण, वैज्ञानिक विकास तथा पर्यावरणीय संकटों के प्रभाव के कारण प्रकृति–चित्रण में व्यापक परिवर्तन दिखाई देता है। अब प्रकृति केवल रमणीय दृश्य नहीं रह गई, बल्कि वह संकटग्रस्त पर्यावरण, मानवीय विघटन और सामाजिक असंतुलन की प्रतीक बन गई है। केदारनाथ सिंह, नागार्जुन, अज्ञेय, भवानी प्रसाद मिश्र, धूमिल, अरुण कमल तथा समकालीन कवियों ने प्रकृति को आधुनिक जीवन की विसंगतियों से जोड़कर प्रस्तुत किया है। आधुनिक कवि प्रकृति के माध्यम से मनुष्य और पर्यावरण के टूटते संबंधों को रेखांकित करते हैं। इस शोध–पत्र में हिन्दी कविताओं में प्रकृति–चित्रण के स्वरूप का अध्ययन आधुनिक दृष्टिकोण के विशेष संदर्भ में किया गया है। इसमें प्रकृति–चित्रण की परम्परा, उसके विकास, आधुनिक कविता में उसके बदलते स्वरूप तथा पर्यावरणीय चेतना से उसके संबंध का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि आधुनिक हिन्दी कविता में प्रकृति केवल सौन्दर्य की वस्तु न होकर सामाजिक चेतना, पर्यावरणीय संकट और मानवीय अस्तित्व के प्रश्नों से जुड़ी हुई है। आधुनिक कवियों ने प्रकृति को एक जीवंत सत्ता

के रूप में चित्रित किया है, जो मनुष्य के नैतिक और सांस्कृतिक संकटों की ओर संकेत करती है। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण संवेदनात्मकता के साथ–साथ वैचारिक और सामाजिक चेतना का भी सशक्त माध्यम बनकर उभरता है।

***मुख्य शब्दः** प्रकृति–चित्रण, आधुनिक हिन्दी कविता, पर्यावरण चेतना, छायावाद, समकालीन कविता, सामाजिक यथार्थ, काव्य–संवेदना*

प्रस्तावना

मानव और प्रकृति का संबंध अत्यन्त प्राचीन और अभिन्न रहा है। मानव सभ्यता के प्रारम्भ से ही प्रकृति उसके जीवन, संस्कृति और साहित्य का आधार रही है। प्रकृति का स्वरूप साहित्य में विभिन्न रूपों में व्यक्त हुआ है। हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण केवल सौन्दर्य–बोध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह मानव–मन की संवेदनाओं, सामाजिक परिवर्तनों और सांस्कृतिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी बना है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है–

"कविता मनुष्य के हृदय को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करती है।"

–(रामचन्द्र शुक्ल, 1983, पृ. 112)

हिन्दी कविता के विकासक्रम में प्रकृति–चित्रण की अनेक प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं। आदिकालीन साहित्य में प्रकृति वीरता और लोकजीवन की पृष्ठभूमि के रूप में उपस्थित है। रीतिकाल में प्रकृति नायिका–भेद और श्रृंगारिक वर्णन का माध्यम बनती है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को आत्मा की संवेदनाओं का प्रतीक माना। सुमित्रानन्दन पंत लिखते हैं–

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया।" –(पंत, 1993, पृ. 45)

आधुनिक युग में प्रकृति–चित्रण का स्वरूप बदल जाता है। प्रकृति केवल सौन्दर्य का विषय नहीं रह जाती, बल्कि वह पर्यावरणीय संकट, औद्योगीकरण और मानव–विमुखता की प्रतीक बन जाती है। कवियों ने प्रकृति के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ को व्यक्त किया है। अज्ञेय लिखते हैं–

"हरी घास पर क्षण भर बैठो, जीवन का संगीत सुनो।" –(अज्ञेय, 2001, पृ. 67)

यह शोध–पत्र हिन्दी कविताओं में प्रकृति–चित्रण के स्वरूप का अध्ययन आधुनिक दृष्टिकोण के विशेष संदर्भ में प्रस्तुत करता है।

हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्राण की परम्परा और स्वरूप

मानव और प्रकृति का संबंध आदिकाल से अत्यन्त घनिष्ठ रहा है। प्रकृति मानव जीवन की मूल प्रेरणा रही है। साहित्य समाज और जीवन का दर्पण होता है, इसलिए प्रकृति साहित्य की अनिवार्य प्रेरणा बनकर उपस्थित होती है। हिन्दी कविता में प्रकृति केवल दृश्य–सौन्दर्य का विषय नहीं है, बल्कि यह मानव के मानसिक, भावात्मक और सांस्कृतिक अनुभवों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है।

हिन्दी कविता में प्रकृति कभी आलम्बन रूप में, कभी उद्दीपन रूप में, कभी प्रतीक और कभी मानवीय संवेदना की सहचरी बनकर प्रकट होती है। प्रत्येक युग के कवियों ने अपनी

युगीन चेतना तथा सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार प्रकृति को देखा और अभिव्यक्त किया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल लिखते हैं–

"कविता मनुष्य के हृदय को प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करती है।"

–(शुक्ल, 1983, पृ. 112)

यह कथन स्पष्ट करता है कि प्रकृति और कविता का संबंध केवल सौन्दर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानवीय भाव–जगत से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है। हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण की परम्परा अत्यन्त समृद्ध और बहुआयामी रही है।

1. प्रकृति–चित्राण की संकल्पनाः प्रकृति में पर्वत, नदियाँ, वृक्ष, वन, ऋतुएँ, पशु–पक्षी, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा आदि सभी दृश्य जगत सम्मिलित हैं। साहित्यकार प्रकृति के माध्यम से अपने भावों, विचारों और अनुभूतियों को अभिव्यक्त करता है।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार– "प्रकृति मानव जीवन की चिर–सहचरी है, इसलिए काव्य में उसका चित्रण स्वाभाविक है।" –(नगेन्द्र, 1997, पृ. 58)

भारतीय काव्यशास्त्र में प्रकृति को रसोत्पत्ति का प्रमुख साधन माना गया है। प्रकृति मानव के मनोभावों को उद्दीप्त करती है हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण निम्नलिखित रूपों में दिखाई देता है–

(क) आलम्बन रूपः जब प्रकृति स्वयं वर्ण्य विषय बन जाती है, तब उसे आलम्बन रूप कहा जाता है। जैसे पर्वत, नदी, वर्षा या वसन्त का स्वतंत्र वर्णन।

(ख) उद्दीपन रूपः जब प्रकृति किसी भाव को तीव्र करने का माध्यम बनती है, तब वह उद्दीपन रूप कहलाती है। विरह, प्रेम और करुणा के प्रसंगों में इसका प्रयोग अधिक होता है।

(ग) मानवीकरणः जब प्रकृति को मानवीय गुण प्रदान किए जाते हैं, तब उसे मानवीकरण कहा जाता है। छायावादी कवियों ने इसका व्यापक प्रयोग किया।

(घ) प्रतीकात्मक रूपः जब प्रकृति किसी विचार, दर्शन या भावना का प्रतीक बन जाती है, तब उसका प्रतीकात्मक प्रयोग माना जाता है।

2. आदिकालीन हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्राणः आदिकाल हिन्दी साहित्य का प्रारम्भिक चरण है। इस काल में युद्ध, शौर्य और सामन्तीय जीवन के प्रभाव के कारण प्रकृति का चित्रण भी वीरता की पृष्ठभूमि के रूप में दिखाई देता है। प्रकृति यहाँ स्वतंत्र सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि युद्ध और संघर्ष की वातावरण–निर्मात्री के रूप में प्रयुक्त हुई है।

चंदबरदाई के पृथ्वीराज रासो में युद्ध के प्रसंगों में प्रकृति का अत्यन्त प्रभावशाली चित्रण मिलता है। आकाश, धूल, सूर्य और बादलों के माध्यम से युद्ध की भयावहता और वीरता दोनों का चित्रण किया गया है। हजारीप्रसाद द्विवेदी लिखते हैं–

"आदिकालीन साहित्य में प्रकृति का चित्रण परिस्थितिजन्य अधिक है, स्वतंत्र अनुभूति कम।"

–द्विवेदी, 1999 पृ0सं0–84

3. भक्तिकाल में प्रकृति–चित्राणः भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण युग है। इस काल में प्रकृति आध्यात्मिक चेतना और भक्ति–भावना से जुड़ जाती है। भक्त कवियों ने प्रकृति को ईश्वर की लीला, प्रेम और आध्यात्मिक अनुभव का माध्यम बनाया।

(क) कृष्णभक्ति काव्य में प्रकृतिः कृष्णभक्ति काव्य में वृन्दावन, यमुना, कुंज, वन और वर्षा ऋतु का अत्यन्त रमणीय चित्रण मिलता है। सूरदास, मीराबाई और नन्ददास ने प्रकृति को कृष्ण की लीलाओं की सहचरी के रूप में चित्रित किया। सूरदास लिखते हैं–

"बरसत देखि दामिनी दमकति, घन घोर गरजत गगन।" –(सूरदास, 2005, पृ. 91)

रामविलास शर्मा लिखते हैं–

"भक्ति कविता में प्रकृति मानव और ईष्वर के भावात्मक संबंध की वाहक बन जाती है।" –(शर्मा, 2001, पृ. 122)

(ख) रामभक्ति काव्य में प्रकृतिः तुलसीदास ने रामचरितमानस में प्रकृति का अत्यन्त सजीव और लोकानुभवपूर्ण चित्रण किया है। वन, पर्वत, नदी और ऋतुएँ उनके काव्य में जीवन और संस्कृति का अभिन्न अंग बन जाती हैं।

तुलसीदास लिखते हैं–

"फूलहिं फलहिं सदा तरु कानन।" –(तुलसीदास, 2007, पृ. 214)

4. रीतिकालीन कविता में प्रकृति–चित्राणः रीतिकाल हिन्दी साहित्य में श्रृंगारिकता और अलंकारिकता का युग माना जाता है। इस काल में प्रकृति का प्रयोग मुख्यतः श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति और नायिका–भेद के लिए किया गया। प्रकृति प्रेम और सौन्दर्य की उद्दीपन सामग्री बन जाती है।

5- छायावादी कविता में प्रकृति–चित्राणः **छायावाद हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण का उत्कर्ष काल माना जाता है। इस युग में प्रकृति केवल बाह्य सौन्दर्य नहीं, बल्कि कवि की अंतःचेतना, संवेदना और आत्मानुभूति की अभिव्यक्ति बन जाती है। छायावादी कवियों ने प्रकृति को मानवीय रूप प्रदान किया।**

(क) सुमित्रानन्दन पंत की प्रकृतिः पंत को प्रकृति का सुकुमार कवि कहा जाता है। उनकी कविता में पर्वतीय सौन्दर्य, हिमालय, फूल, चाँदनी और वसन्त का अत्यन्त कोमल चित्रण मिलता है। पंत लिखते हैं–

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया।" –(पंत, 1993, पृ. 45)

(ख) महादेवी वर्मा की प्रकृतिः महादेवी वर्मा ने प्रकृति को करुणा, विरह और वेदना की संवेदना से जोड़ा। उनकी कविता में बादल, वर्षा और रात्रि मानवीय पीड़ा के प्रतीक बन जाते हैं। **"मैं नीर भरी दुख की बदली।" –(महादेवी वर्मा, 2002, पृ 39)**

यहाँ बादल कवयित्री के अंतर्मन की वेदना का प्रतीक है।

(ग) जयशंकर प्रसाद की प्रकृतिः प्रसाद की कविता में प्रकृति दार्शनिक और सांस्कृतिक चेतना से जुड़ी हुई है। उनकी प्रकृति रहस्यात्मक और आध्यात्मिक अनुभूति प्रदान करती है। प्रसाद लिखते हैं–

"अरुण यह मधुमय देश हमारा।" –(प्रसाद, 2004, पृ. 73)

यहाँ प्रकृति राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक बन जाती है।

(घ) निराला की प्रकृतिः निराला ने प्रकृति को यथार्थ और श्रमिक जीवन से जोड़ा। उनकी कविता में प्रकृति केवल सौन्दर्य नहीं, बल्कि संघर्ष और जीवन–सत्य की अभिव्यक्ति है। निराला लिखते हैं–

"वह तोड़ती पत्थर।" –(निराला, 1999, पृ. 58)

नामवर सिंह लिखते हैं– "छायावादी कविता में प्रकृति आत्मा की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति बन जाती है।" –(नामवर सिंह, 2003, पृ. 66)

6. हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्राण के प्रमुख आयामः हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण केवल सौन्दर्य–वर्णन तक सीमित नहीं रहा। इसके अनेक आयाम विकसित हुए हैं–

(क) सौन्दर्यात्मक आयामः प्रकृति सौन्दर्य और आनंद का प्रमुख स्रोत रही है। कवियों ने फूलों, नदियों, पर्वतों और ऋतुओं के माध्यम से सौन्दर्यबोध की अभिव्यक्ति की।

(ख) भावात्मक आयामः प्रेम, विरह, करुणा और उल्लास जैसे भावों की अभिव्यक्ति प्रकृति के माध्यम से की गई।

(ग) दार्शनिक आयामः छायावादी और रहस्यवादी कवियों ने प्रकृति को ब्रह्म और आत्मा के संबंध से जोड़कर देखा।

(घ) सांस्कृतिक आयामः प्रकृति भारतीय संस्कृति और लोकजीवन का अभिन्न अंग रही है। तुलसीदास और सूरदास की कविता में यह विशेष रूप से दिखाई देता है।

(ङ) सामाजिक आयामः आधुनिक कविता में प्रकृति सामाजिक यथार्थ, पर्यावरणीय संकट और मानवीय संघर्षों की प्रतीक बन जाती है।

इस प्रकार हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण की परम्परा अत्यन्त व्यापक, समृद्ध और बहुआयामी रही है।

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्राण का बदलता स्वरूप

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण का स्वरूप पूर्ववर्ती काव्यधाराओं की अपेक्षा अत्यन्त भिन्न और व्यापक दिखाई देता है। जहाँ प्राचीन और मध्यकालीन कविता में प्रकृति मुख्यतः सौन्दर्य, भक्ति तथा श्रृंगार की अभिव्यक्ति का माध्यम थी, वहीं आधुनिक युग में वह सामाजिक यथार्थ, मानवीय संकट, अस्तित्व–बोध और पर्यावरणीय चेतना की प्रतीक बन गई।

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण अधिक यथार्थवादी और वैचारिक हो गया। आधुनिक कविता में प्रकृति के माध्यम से कवि मानव सभ्यता की विडम्बनाओं और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करता है। नामवर सिंह लिखते हैं–

"आधुनिक कविता में प्रकृति सौन्दर्य का विषय मात्र नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती है।" (नामवर सिंह, 2003, पृ. 118)

1. आधुनिक युग और प्रकृति के प्रति बदलती दृष्टि– आधुनिक युग विज्ञान, तकनीक और औद्योगिक विकास का युग है। मशीनों और षहरी जीवन ने मनुष्य को प्रकृति से दूर कर दिया। परिणामस्वरूप कविता में प्रकृति के प्रति दृष्टिकोण भी परिवर्तित हो गया। अब प्रकृति केवल आनंद और सौन्दर्य की वस्तु नहीं बन गई। रामविलास शर्मा के अनुसार–

"आधुनिक युग में प्रकृति का प्रश्न सामाजिक और आर्थिक प्रश्नों से जुड़ जाता है।"(शर्मा, 2001, पष् 213)

2. प्रगतिवादी कविता में प्रकृति–चित्राण– प्रगतिवादी कविता में प्रकृति का चित्रण यथार्थवादी दृष्टिकोण से किया गया। इस धारा के कवियों ने प्रकृति को किसान, मजदूर और श्रमिक जीवन से जोड़कर देखा। प्रकृति अब केवल सौन्दर्य की वस्तु नहीं, बल्कि श्रम और जीवन–संघर्ष का आधार बन जाती है।

(क) नागार्जुन की प्रकृतिः नागार्जुन की कविता में प्रकृति लोकजीवन और जन–संवेदना से जुड़ी हुई है। उनकी कविता में खेत, नदियाँ, पेड़, बादल और गाँव का वातावरण अत्यन्त सजीव रूप में उपस्थित होता है। नागार्जुन लिखते हैं–

"अमल धवल गिरि के शिखरों पर बादल को घिरते देखा है।" –(नागार्जुन, 2006, पृ. 44)

यहाँ प्रकृति केवल दृश्य नहीं है, बल्कि जनजीवन और लोक–संस्कृति का प्रतीक है।

(ख) केदारनाथ अग्रवाल की प्रकृतिः केदारनाथ अग्रवाल ने प्रकृति को श्रमशील जीवन और जनपदीय चेतना से जोड़ा। उनकी कविता में नदी, मिट्टी, खेत और पेड़ श्रमिक जीवन के प्रतीक बन जाते हैं। केदारनाथ अग्रवाल लिखते हैं–

"यह हरा ठिगना चना, बाँधे मुरैठा शीष पर।" –(केदारनाथ अग्रवाल, 1998, पृ. 52)

यहाँ प्रकृति का मानवीकरण करते हुए कवि ने ग्रामीण जीवन की जीवंतता को प्रस्तुत किया है। विश्वम्भरनाथ उपाध्याय लिखते हैं–

"प्रगतिवादी कविता की प्रकृति धरती और श्रम की प्रकृति है।" –(उपाध्याय, 2004, पृ. 139)

3. प्रयोगवाद और नई कविता में प्रकृति– प्रयोगवाद और नई कविता में प्रकृति का स्वरूप अत्यन्त वैयक्तिक और अस्तित्ववादी हो गया। आधुनिक जीवन की जटिलताओं, अकेलेपन और मानसिक तनाव को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त किया गया।

(क) अज्ञेय की प्रकृति–दृष्टिः अज्ञेय आधुनिक हिन्दी कविता के प्रमुख कवि हैं। उनकी कविता में प्रकृति आत्म–अन्वेषण और अस्तित्व–बोध का माध्यम बनती है। अज्ञेय लिखते हैं–

"हरी घास पर क्षण भर बैठो, जीवन का संगीत सुनो।" –(अज्ञेय, 2001, पृ. 67)

(ख) धर्मवीर भारती की प्रकृतिः **धर्मवीर भारती की कविता में प्रकृति आधुनिक संवेदनाओं की वाहक है। उनकी कविता में चाँद, नदी और वर्षा प्रेम तथा अस्तित्वगत अनुभूति से जुड़े हैं।**

धर्मवीर भारती लिखते हैं—

"यह फागुन की शाम है।" —(भारती, 2005, पृ. 88)

यहाँ प्रकृति मानवीय स्मृतियों और भावनाओं को उद्दीप्त करती है।

नई कविता में प्रकृति का स्वरूप अधिक प्रतीकात्मक और बौद्धिक हो जाता है। प्रकृति कवि के आंतरिक संघर्षों और आधुनिक जीवन की विसंगतियों की प्रतीक बन जाती है।

4. आधुनिक कविता में पर्यावरणीय चेतना— आधुनिक हिन्दी कविता में पर्यावरणीय चेतना एक महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति के रूप में उभरती है। वैज्ञानिक विकास और औद्योगिक विस्तार के कारण प्रकृति का तीव्र दोहन हुआ। जंगलों की कटाई, नदियों का प्रदूषण और पर्यावरण असंतुलन ने कवियों को गहरे रूप में प्रभावित किया। केदारनाथ सिंह लिखते हैं—

"पेड़ पृथ्वी के पहले नागरिक हैं।" —(केदारनाथ सिंह, 2010, पृ. 91)

यह कथन आधुनिक पर्यावरणीय चेतना का सशक्त उदाहरण है। कवि पेड़ों को केवल प्राकृतिक वस्तु नहीं, बल्कि जीवन और सभ्यता का आधार मानता है। भवानी प्रसाद मिश्र लिखते हैं—

"सतपुड़ा के घने जंगल, नींद में डूबे हुए से।" —(मिश्र, 2001, पृ. 28)

5. शहरीकरण और प्रकृति का संकट— आधुनिक युग में शहरीकरण ने मनुष्य को प्रकृति से दूर कर दिया। महानगरीय जीवन में कृत्रिमता और यांत्रिकता बढ़ने लगी। आधुनिक कवियों ने इस स्थिति को गहरी संवेदना के साथ व्यक्त किया। धूमिल लिखते हैं—

"धरती पर एक हरी पत्ती ओस कणों के लिए अब भी रात बीतने का इंतजार कर रही है।"

—(धूमिल, 2005, पृ 64)

6. आधुनिक कविता में प्रकृति का प्रतीकात्मक स्वरूप— आधुनिक हिन्दी कविता में प्रकृति का प्रयोग प्रतीक और बिंब के रूप में अत्यधिक हुआ है। आधुनिक कवि प्रकृति के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक यथार्थ को अभिव्यक्त करता है।

(क) पेड़ का प्रतीकः पेड़ आधुनिक कविता में जीवन, स्मृति और अस्तित्व के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुआ है। केदारनाथ सिंह लिखते हैं—

"जब तक पेड़ हैं, तब तक पृथ्वी पर मनुष्य बचा रहेगा।" —(केदारनाथ सिंह, 2010, पृ 96)

(ख) नदी का प्रतीकः नदी आधुनिक कविता में जीवन—प्रवाह, संघर्ष और समय की प्रतीक बन जाती है। अरुण कमल तथा अन्य समकालीन कवियों ने नदी को मानवीय चेतना और सभ्यता से जोड़ा है।

(ग) वर्षा और बादलः आधुनिक कविता में वर्षा और बादल आशा, स्मृति तथा सामाजिक परिवर्तन के प्रतीक हैं। ये प्रकृति के माध्यम से मानवीय संवेदना को व्यक्त करते हैं।

7. आधुनिक कविता में प्रकृति और मानवीय अस्तित्व— आधुनिक युग में मनुष्य अकेलेपन, तनाव और अस्तित्वगत संकट से गुजर रहा है। प्रकृति आधुनिक मनुष्य के लिए आत्मिक शांति और अस्तित्व—बोध का माध्यम बनती है। अज्ञेय लिखते हैं—

"प्रकृति के बीच मनुष्य स्वयं को अधिक पहचानता है।" –(अज्ञेय, 2001, पृ. 71)

आधुनिक हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण का स्वरूप अत्यन्त व्यापक और बहुआयामी हो गया है। यहाँ प्रकृति केवल सौन्दर्य का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना, पर्यावरणीय संकट, मानवीय संघर्ष और अस्तित्व–बोध की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनकर उभरती है।

निष्कर्ष

हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण की परम्परा अत्यन्त समृद्ध और व्यापक रही है। आदिकाल से लेकर समकालीन युग तक प्रकृति का स्वरूप निरन्तर परिवर्तित होता रहा है।

आधुनिक और समकालीन हिन्दी कविता में प्रकृति–चित्रण का स्वरूप अधिक यथार्थवादी, वैचारिक और सामाजिक हो गया। आधुनिक कवियों ने प्रकृति को पर्यावरणीय संकट, औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा मानवीय विघटन के संदर्भ में देखा। समकालीन कविता में प्रकृति केवल सौन्दर्य की वस्तु नहीं रही, बल्कि वह मानव अस्तित्व, सांस्कृतिक अस्मिता और पर्यावरणीय चेतना का प्रतीक बन गई।

आज की हिन्दी कविता प्रकृति के माध्यम से मनुष्य को उसकी जड़ों, संवेदनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने का प्रयास करती है। स

संदर्भ

1. अज्ञेय. (2001). हरी घास पर क्षण भर. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
2. अनामिका. (2016). स्त्रीत्व का मानचित्र. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
3. अरुण कमल. (2011). नए इलाके में. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
4. उपाध्याय, विश्वम्भरनाथ. (2004). प्रगतिवादी कविता की भूमिका. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
5. कात्यायनी. (2014). जादू नहीं कविता. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन।
6. केदारनाथ अग्रवाल. (1998). फूल नहीं रंग बोलते हैं. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
7. केदारनाथ सिंह. (2010). उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
8. डबराल, मंगलेश. (2010). आवाज भी एक जगह है. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
9. तिवारी, अजय. (2018). पर्यावरण और हिन्दी कविता. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
10. त्रिपाठी, विश्वनाथ. (2012). समकालीन हिन्दी कविता का परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
11. द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (1999). हिन्दी साहित्य की भूमिका. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
12. धूमिल. (2005). संसद से सड़क तक. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
13. नगेन्द्र. (1997). हिन्दी साहित्य का इतिहास. नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
14. नागार्जुन. (2006). नागार्जुन रचनावली. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
15. नामवर सिंह. (2003). कविता के नए प्रतिमान. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
16. निर्मला पुतुल. (2015). नगाड़े की तरह बजते शब्द. नई दिल्ली, आधार प्रकाशन।
17. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी. (1999). परिमल. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
18. पंत, सुमित्रानन्दन. (1993). पल्लव. इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।